



“साहीर”

राकेश कुमार वर्मा

कवि, लेखक, आर्टिस्ट LineSays.org

ये तो सुरुआत है, मत मुझे आकना.
हार की बगलों तले, न शहर झाकना १

बोझ बनकर जुबा, गीर न जाये कही.
मेरी हारो तले, न वो मेरा मंजर ताकना २

के साहीर कही, क्यू रहम की दुआ.
लोग पत्थर यहाँ, न दुआ मांगना ३

यू बरष के जमीं भी, सहर, मांग ले.
तेरी पनाहों में आपना ही, घर मांग ले ४

वो जो बिगड़ा नहीं, अभी अजनबी जानना.
मेरे लफजो से लिपटा, जहर-नशी मानना ५

अभी राखे जवानी बड़ी दूर है, साहीर
ललाट-ऐ-नमकीन हो पानी, उसे यहाँ ठोर है, साहीर ६

तू वो उजला सा चहरा, कर पर्दा नशी.
मेरे नशो में उफनता, खून अभी ठंडा नही ७

ऐ आँखों के अंधे, जरा जोर दे,
मेरी अंगड़ाईयो को वक्त पे छोड़ दे,

फिर ये जलजला-ऐ-वाकिफ़, तू हो जायेगा,
मेरी हरकत से जालीम, तू सों जयेगा ८



यू रखेंगे कदम, हम कभी झूम के,
हर गली में हमारी ही शोगत हो,

जिन मुह गाली भरी है शर्घोशिया,
वक्त आने दे, मुसकां भरी हो ताली वहाँ ९

फिर हम किनारों पे बैठे होंगे सहर,
और तुम बस्ती में डूबे किताबी जिगर.

नवाजो मैं मुक्कल, हम भी रब-ऐ-हाजीर तो हो
तब ये कहना के सहर, तू हमसे वाकिफ़ न हो १०

जब ये कहना के बन्दे की बाते, बेकसूर निकली.
तेरे कलेजे को चीरती, बस शूल निकली ११

अभी राते बड़ी हैं,
सोया न सहर.

मेरे कर्मों की निकली न सवारी इधर,
तू क्यूं रोके, उफनते ज्वार आ गये.

वक्त बदलेगा, और तुम देखोगे,
हम मुक़ाम पा गये ... हम मुक़ाम पा गये १२